

SHRI LAISRAM BIRENDRAKUMAR SINGH

Shri Laisram Birendrakumar Singh has been an Engineer by Profession and retired from the Government Services in 1979 as an Assistant Engineer PWD, Manipur. Born on December 08, 1920, Shri Singh showed his interest in music early from his childhood particularly the Indian Raga music and Light music. While studying in East Bengal, a gentleman imparted to him "you must respect your own folk music it is your identity only then you will be able to get your high status in the world culture". Shri Singh took the words seriously and believe of in it. After returning home, he started learning folk music. Then after retirement from Government service, he dedicated his whole soul to folk music both academically and scientifically by associating himself with folk-lorist and musicologist from Bengal, Assam, Tamil Nadu and even from America. He has been learning folk and tribal music of Manipur including tribal indigenous music and instruments.

2. The Government of Manipur conveyed its deepest appreciation for Shri Singh's contribution in making the tribal Folk Music 1992, a grand success. Manipur University appointed him as an expert and external Examiner of the University. He was an adviser to the Chairman of Union Public Service Commission, in an interview for the selection of Programme Executive for AIR Imphal. Shri Singh was a member of various organizations i.e. The society of Ethnomusicology (SEM), Indiana University, U.S.A and Governing Body Member of the Eastern Zonal Cultural Centre (EZCC) 1986-88.

3. Shri Singh contributed various articles in folk songs of Manipur and associated with Kansai University of Foreign Studies Japan. However the book was not published (1983). Various awards were conferred from the State i.e. Laisram Gourahari Memorial Award 1979; Thoibi Award 1992; Governor Award for outstanding contribution to the growth and development of Manipur music 2002; Meitram Bira Award 2003 and Sangeet Ratna 2004. Various awards were conferred from outside State i.e. Sangeet Natak Academy Award for Folk and Tribal music of Manipur, New Delhi, 2003; Conferment of Honoris Causa — DOCTOR OF LITERATURE DEGREE in recognition of his contribution to Manipur Folklore by Hon'ble President of India; Shri Pranab Mukherjee at Manipur University; Sangeet Natak Academy New Delhi has nominated Shri Singh as a Member of newly constituted Advisory Committee of the Jawaharlal Nehru Manipur Dance Academy, Imphal for the term 2015-2020. His latest work at present is study of PENA music an indigenous musical instrument of Manipur.



श्री लाइश्रम बीरेन्द्रकुमार सिंह

श्री लाइश्रम बीरेन्द्रकुमार सिंह पेशे से एक इंजीनियर हैं और आप सहायक अभियंता, पी. डब्ल्यू. डी., मणिपुर के रूप में वर्ष 1979 में सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त हुए हैं। आपका जन्म 8 दिसम्बर, 1920 को हुआ था। आपने अपने बचपन की शुरूआत में ही संगीत के प्रति और विशेष रूप से भारतीय राग संगीत और लाइट म्यूजिक में अपनी अभिरूचि दिखाई। जब आप पूर्वी बंगाल में अध्ययन कर रहे थे, तब एक भद्र पुरूष ने आपको यह शिक्षा दी कि "आपको अपने लोक संगीत का सम्मान करना चाहिए और जब आप विश्व संस्कृति में अपना उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करेंगे तो यह आपकी पहचान बनेंगी"। आपने इस बात को गंभीरता से अंगीकार किया और उस पर विश्वास भी कर लिया। घर वापस आने के पश्चात, आपने लोक संगीत सीखना प्रारंभ कर दिया। इसके पश्चात, सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त होने के बाद आपने स्वयं को बंगाल, असम, तमिलनाडु और यहां तक कि अमेरिका के लोक कलाविदों और संगीतज्ञों के साथ सहायोजित करके शैक्षणिक और वैज्ञानिक दोनों रूप से लोक संगीत को आत्मसात करने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। आप जनजातीय संगीत और वाद्ययंत्रों सहित मणिपुर के लोक एवं जनजातीय संगीत को सीखते रहे हैं।

2. मणिपुर सरकार ने जनजातीय लोक संगीत को महानता की अपार सफलता तक पहुंचाने में आपके योगदान के लिए आपकी भूरि-भूरि सराहना की। मणिपुर विश्वविद्यालय ने आपको इस क्षेत्र में विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ एवं बाह्य मूल्यांकनकर्ता के रूप में नियुक्त किया। आप ऑल इंडिया रेडियो, इंफाल के कार्यक्रम कार्यपालक के चयन संबंधी साक्षात्कार में संघ लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष के सलाहकार रहे हैं। आप विभिन्न संगठनों अर्थात सोसाइटी ऑफ इथ्नोम्यूजिकोलोजी (एसईएम), इंडियन यूनिवर्सिटी ब्लूमिंगटन, यू एस ए और पूर्वी मण्डलीय सांस्कृतिक केन्द्र (ई जेड सी सी) 1986-88 के सदस्य भी रहे हैं।

3. आपने मणिपुर के लोक गीतों पर विभिन्न प्रकार के लेख भी लिखे हैं और आप कंसई यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज, जापान के साथ ही जुड़े रहे हैं। तथापि, आपकी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई (1983)। आपको राज्य की ओर से विभिन्न प्रकार के पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जिनमें लाइश्रम गौराहरी मेमोरियल अवार्ड, 1979, थोइबो अवार्ड, 1992, मणिपुर संगीत के उत्थान एवं विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिए गवर्नर अवार्ड 2002, मेइतराम बीरा अवार्ड 2003 और संगीत रतन अवार्ड 2004 प्रमुख हैं। आपको अन्य राज्यों से भी विभिन्न प्रकार के पुरस्कार प्रदान किए गए हैं जिनमें मणिपुर के लोक एवं जनजातीय संगीत के लिए संगीत नाटक अकादमी अवार्ड, नई दिल्ली-2003, भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा मणिपुर विश्वविद्यालय में मणिपुर लोक साहित्य में आपके योगदान के प्रतीक के रूप में होनोरिस कौसा – डॉक्टर ऑफ लिटरेचर डिग्री; संगीत नाटक अकादमी , नई दिल्ली द्वारा आपको जवाहरलाल नेहरू मणिपुर डांस अकादमी, इम्फाल की नवगठित सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में 2016-2020 तक के कार्यकाल के लिए नामित किया गया है। वर्तमान समय में आप मणिपुर के देशज संगीत वाद्ययंत्रों पर आधारित "पेना" संगीत का अध्ययन कर रहे हैं।